Date
21/12/2008

दृष्टि
The Vision

पुस्तिका सं. (Sheet No.) ____

(3)/09। 3.40 1.45

उत्तर पुस्तिका (Answer Sheet)

नाम (Name) Mukesh Kumar, J.N.U. विषय (Subject) भाषा-विज्ञान तिथि (Date) ____

पता (Address) ____ फोन नंबर (मोबाइल) ____

Please don't write anything in this space

(1) S.N. - (i) अपभ्रंश के भेद

(ii) 19वीं सदी पूर्व खड़ी बोली का काव्यभाषा के रूप में विकास

(iii) अवधी एवं भोजपुरी का संबंध

(iv) हिन्दी की वाक्य व्यवस्था

(2) मानक हिन्दी की व्याकरणिक संरचना पर संक्षिप्त निबंध लिखें।

(3) हिन्दी की प्रमुख बोलियों का परिचय दें।

(4) हिन्दी भाषा की विकास यात्रा का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करें।

Please don't write anything in this space

दृष्टि The Vision

पुस्तिका सं. (Sheet No.) ....

उत्तर पुस्तिका (Answer Sheet)

(Name) Mukesh Kumar .... विषय (Subject) .... तिथि (Date) ....

(Address) .... फोन नंबर (मोबाइल) ....

टिप्पणी :- (i) 19वीं सदी पूर्व खड़ी बोली का काव्यभाषा के रूप में विकास :-

'खड़ी' बोली का काव्यभाषा ~~1800~~ के रूप में विकास की प्रक्रिया को अमीर खुसरो के समय की ओर देखा जा सकता है। ~~इ~~ हूँ तो निरभिव्यंजकता एवं पहेलियों के उदय ने 'खड़ी बोली' को एक हद तक ~~विशिष्ट~~ विशिष्ट बना दिया था, लेकिन खड़ी बोली की काव्यभाषा का रूप अपेक्षाकृत अविशिष्ट बना रहा। अमीर खुसरो ने पहेलियों, मुकरियों, दो सुखने के जरिए काव्यभाषा का विकास किया। खड़ी बोली के आधुनिक स्वरूप की झाँकी का आभास इनके यहाँ सुरक्षित है :-

'एक थाल मोती (से) भरा, सबके सिर (पर) औंधा धरा'

× ×   × ×

एक नार (ने) अचरज किया
साँप मार पिंजड़े (में) दिया

× ×   × ×

घोड़ा (क्यों) अड़ा ?
पान क्यों सड़ा ?

उपर्युक्त तीनों उदाहरणों में 'से', 'पर', 'ने', 'में' एवं 'क्यों' का प्रयोग यह दर्शाता है कि खड़ी बोली में स्थिरता आ रही थी। 'ने' का प्रयोग तो खड़ी बोली के विकास को भी दर्शाता है।

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

पीर जैसे भी अपनी रचनाएँ खड़ी बोली में की हैं। दक्खिनी हिन्दी में भी खड़ी बोली में रचनाएँ लिखी गयीं। इसी कुतुबशाह ने अपनी गजलों के जरिए इस परंपरा को समृद्ध किया। जैसे:-

'तुम बिन पी बिन जाने कदमों यूँ रहूँगा
आहु है मेरे नैन नजारा यूँ रहेगा'

दक्खिनी हिन्दी के प्रथम कवि निजामी के यहाँ भी ऐसी ही भाषा का प्रयोग है, जो खड़ी बोली के नजदीक है। खड़ी बोली का परंपरागत रूप 18वीं सदी में गजलों के आधार आकार ग्रहण करने लगा। मिर्जा गालिब जैसे गंभीर अध्ययनकारी शायरों ने अपने-अपने स्तर पर इसमें योग दिया। जैसे:-

[illegible] रेख्ते के तुम्हीं उस्ताद नहीं हो गालिब
कहते हैं अगले जमाने में कोई मीर भी था

* * * *

जो कुछ के [illegible] है, है तो भी आदमी

इस प्रकार हम देखते हैं कि अवधी, ब्रज आदि भाषाओं जैसी जगह खड़ी बोली के शब्दों, व्याकरणिक प्रयोगों के विकास में योग दिया, वहीं अरबी व फारसी के शब्दों ने खड़ी बोली में लचीलापन लाने की कोशिश की। खड़ी बोली की साहित्यिक भाषा होने के पहले ही [illegible] रूप पर दिख रहे थे। इस प्रकार भारतेंदु के पहले खड़ी बोली ने साहित्य-भाषा के रूप में अपना अधिक विकास किया।

दृष्टि The Vision
पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष :-011-27654128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti thevision@rediffmail.com

उत्तर पुस्तिका (Answer Sheet)

(Name) ______ विषय (Subject) ______ दिनांक (Date) ______

(Address) ______ फोन नंबर (फोन/मोबाइल) ______

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

प्र.सं. (iii) - अवधी एवं भोजपुरी का संबंध :-

अवधी भाषा के विषय में भाषा-वैज्ञानिकों का दावा है कि यह बहुत ही पुरानी भाषा है। मध्यदूर देश के अभिलेखों से लेकर पाली भाषा के साथ अवधी के संबंधों की अलग-अलग पर अध्ययन किया गया है। जहाँ तक भोजपुरी के साथ इसके संबंधों का सवाल है तो दोनों ही पूर्वी हिन्दी की उप बोलियाँ हैं। दोनों ही भाषाएं अर्धमागधी भाषा से निकलकर सामने आते हैं। अवधी यदि साहित्यिक भाषा के रूप में बेहद ही समृद्ध भाषा है तो भोजपुरी व्यावहारिक बोलचाल की भाषा के रूप में।

अवधी और भोजपुरी में शब्दसंरचना एवं व्याकरणात्मक अभिव्यक्ति की समानताएं बहुत ज्यादा है।

जैसे:- (i) दोनों ही बोलियों में 'ने' का प्रयोग नहीं मिलता है।

(ii) दोनों में भूतकालिक कृदंत प्रत्यय के रूप में -अल का प्रयोग मिलता है। जैसे:- चलल, मिलल

भूतकाल में '-ल' प्रत्यय का प्रयोग ही व्यापक है:- आइल, गइल, चल गइल आदि।

(iii) भविष्यत् कालिक कृदंत के रूप में '-अब' प्रत्यय का प्रयोग दोनों ही भाषाओं में सामान्य रूप से होता

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

है। जैसे :- देखब, करब, सुनब, चलब

(iv) स्त्री-प्रत्ययों की समानता दोनों में देखी जा सकती :—
चिल्लाहट, कड़ुआहट, मुस्कराहट आदि

(v) अवधी एवं भोजपुरी में संज्ञा के तीनों रूप मिलते हैं। जैसे :- घोड़ा, घोड़ौ, घोड़नी

(vi) दोनों ही भाषाएँ विश्लेषित हैं।

(vii) दोनों इस प्रकार उ०प्र० के अवध क्षेत्र एवं बिहार मध्य व पश्चिमी बिहार में क्रमश: अवधी व भोजपुरी बोली जाती है। फैजाबाद, गोंडा, उन्नाव आदि क्षेत्रों में अवधी एवं गोरखपुर, देवरिया, आजमगढ़, बनारस, भोजपुर, आरा, बक्सर आदि में भोजपुरी बोलचाल की भाषा है। कहना चाहिए कि भिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में होने के बावजूद अवधी एवं भोजपुरी भाषाओं में अनेक शब्द समान हैं और प्रत्ययों व व्याकरण (भाषाओं) में भी समानता है। इस प्रकार अवधी एवं भोजपुरी भौगोलिक एवं व्याकरणिक रूप से भाषायी आधार पर भी निकट रही हैं।

12

—

दृष्टि The Vision

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष –011-27654128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti_thevision@rediffmail.com

दृष्टि The Vision

पुस्तिका सं. (Sheet No.) ....

उत्तर पुस्तिका (Answer Sheet)

(Name) .... विषय (Subject) .... तिथि (Date) ....

(Address) .... फोन नंबर (मोबाइल) ....

(14) हिन्दी की वाक्य-व्यवस्था :-

हिन्दी की वाक्य-संरचना अपने प्रारंभिक दौर में ही अनिश्चित पदानुक्रम का ध्यान रखने लगी। '[illegible] खाओ' के विपरीत हिन्दी में पदों के अनुक्रम का ध्यान रखा जाता था, जिससे हिन्दी की वाक्य-संरचना को आधिक क्रमागत 'कर्ता-कर्म-क्रिया' का क्रम वाक्यों के चलन में अपनाया जाता है।

जैसे :- (राम) ने (आम) (खाया)।
↓ कर्ता ↓ कर्म ↓ क्रिया

सामान्यतया हिन्दी की वाक्य संरचना 'कर्ता-कर्म-क्रिया' के सहारे ही चलती है लेकिन वाक्यों को प्रभावशाली बनाने के लिए सहायक क्रियाओं व परसर्गों के सहारे इस क्रम को आगे-पीछे भी किया जा सकता है।

जैसे :- (आम) तो (राम) ने ही (खाया) था।
↓ कर्म ↓ कर्ता ↓ क्रिया

जैसे (पढ़ना) होगा आपको आज भी है (मोहनलाल)
↓ (क्रिया) ↓ कर्ता

वाक्य- चूंकि शब्दों का एक व्यवस्थित समूह होता है, जो अर्थ-

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-27604126, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti_thevision@rediffmail.com

अभिव्यक्ति करने में सक्षम हो। इसलिए भावाभिव्यक्ति के बगैर किसी शब्द-समूह को वाक्य नहीं माना जा सकता है। वाक्य कई बार किसी शब्द या अक्षर के रूप में भी हो सकते हैं, जिसे अपूर्ण वाक्य कहा जाता है। इस प्रकार वाक्य के दो भेद हैं:-

(i) पूर्ण वाक्य (ii) अपूर्ण वाक्य

कौन है? → मैं

तुम खाना नहीं खाओगे! → न

हिन्दी में वाक्य-व्यवस्था में सरल वाक्य, मिश्र वाक्य एवं संयुक्त वाक्य जैसे भेद भी किए गए हैं। जैसे:- सरल राम आता है।

मिश्र → राम आता है और सीता पढ़ती है।

संयुक्त → राम आता है क्योंकि उसे पढ़ना है।

इसके अलावा भी संयुक्त-मिश्र, मिश्र-मिश्र, संयुक्त-संयुक्त वाक्य जैसे कई भेद हिन्दी में किए गए हैं। इसी प्रकार 'कर्तरि, कर्मणि, भाव' जैसे भेद भी देखने को मिलते हैं। वाक्यों के प्रयोग में 8 कारकों, 2 लिंगों एवं 2 वचनों आदि का प्रयोग किया जाता है। हिन्दी में वाक्य बनाते समय संख्या के साथ-साथ वस्तु में भी बहुवचन के चिह्न का प्रयोग करते हैं। जैसे- Seven Sisters.

(सातों) बहनें
↓
सात का बहुवचन

इस प्रकार हिन्दी वाक्य-व्यवस्था भी वैज्ञानिक तरीके से विकसित की गई है। इसमें विशेषण का प्रयोग, सर्वनाम, शब्द-नियम, क्रिया विशेषण आदि का प्रयोग होता है ताकि वाक्य अर्थ की अभिव्यक्ति बेहतर हो सके।

(13)

प्रश्न सं.- ④ उत्तर:-

हिन्दी भाषा की विभिन्न भाषाओं, बोलियों का साथ स्वीकारते हुए अपने को निरंतर परिमार्जित करते हुए विकसित हुई भाषा है। संस्कृत - पालि - प्राकृत - अपभ्रंश - अवहट्ठ से विकसित होकर खड़ी बोली ने हिन्दी भाषा का रूप ग्रहण किया। अमीर खुसरो ~~के भक्तिकाल में खड़ी बोली~~ का आदर पाकर खड़ी बोली दूर-दूर तक फैली और पुनः दक्खनी हिन्दी से होते हुए भारतेन्दु के यहाँ हिन्दी भाषा के रूप में भी रही। कहना चाहिए कि हिन्दी भाषा की विकास-यात्रा भारतीय संस्कृति व इतिहास की विकास-यात्रा है।

अमीर खुसरो के यहाँ खड़ी-बोली का आदि रूप सबसे पहले मिलता है। इनके द्वारा लिखित मुकरियों, पहेलियों, दो सुखने में खड़ी बोली का रूप देखा जा सकता है:-

एक नार ने अचरज किया
साँप मार पिंजरे में दिया

यहाँ 'ने' का प्रयोग 12वीं सदी में भी किया गया है जो तब इसके बाद के कई सदियों तक किसी अन्य भाषा में दिखाई नहीं पड़ता है। दक्खनी हिन्दी में 'ने' का यही प्रयोग मिलता है लेकिन वह कर्ता कारक के रूप में नहीं।

जैसे:- बादशाह सलाम किया (बादशाह के पाँव ने भी है)
लोगाँ ने बातां करियाँ

दक्खनी हिन्दी में प्रेरणार्थक क्रिया के रूप में कहना, लिखना आदि क्रियाएँ तो पकड़ावेना, समझावेना, मालूम, मेहरबान जैसे शब्द भी। नामदेव, एकनाथ, तुकाराम जैसे संतों ने ऐसे शब्दों को बार-बार प्रयोग में लाया। खड़ी बोली का प्रथम गद्य भी दक्खनी हिन्दी में ही सर्वप्रथम लिखा गया। जैसे- मुल्ला वजही कृत 'सबरस' इसका प्रमाण है।

19वीं सदी में हिन्दी भाषा का विकास विशेष के प्रसार भी फूला-फला और 'निज भाषा उन्नति अहै, निज उन्नति को मूल

का आदर्श लेकर भारतेंदु एवं उनकी मंडली ने हिन्दी भाषा को हिन्दी जातीयता व श्री ने चेतना से जोड़ दिया। भारतेंदु, प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन आदि ने नव जातीय चेतना के निर्माण में योग दिया। यह ऐसा दौर था जब वे अनेक वैचारिक व अनेक राजनीतिक द्वन्द्व में झूल रहे थे। परंपरा बनाम आधुनिकता, भाषा बनाम नई, ईश्वर बनाम मनुष्य.. की अंतर्द्वन्द्वात्मक व्यवस्था में हिन्दी भाषा का विकास हुआ। ब्राह्मण; 'आयस्य बाजार', 'हरिश्चंद्र मैगजीन', 'कविवचन सुधा' जैसी पत्रिकाओं ने हिन्दी भाषा को लेखकों की भाषा में तब्दील कर दिया। अंग्रेज़ी नाटक, सामाजिक-धार्मिक-राजनीतिक विषयक निबंध लिखे गए।

फोर्ट विलियम कॉलेज एवं ईसाई मिशनरियों ने भी हिन्दी भाषा के विकास में अतुलनीय योगदान दिया। सदल मिश्र एवं लल्लूजी लाल ने फोर्ट विलियम कॉलेज में रहकर एवं इंशा अल्ला खाँ व सदासुखलाल जी ने बाहर रहकर हिन्दी को समृद्ध किया। सदल मिश्र ने 'नासिकेतोपाख्यान' एवं लल्लूजी लाल ने 'प्रेमसागर' लिखा। इंशाअल्ला खाँ ने 'रानी केतकी की कहानी' लिखकर 'कहानी' की शुरुआत की। खड़ी भाषा की रूप हिन्दी आलोचकों ने बताया है। ईसाई मिशनरियों में पुर्तगीजों ने प्रारंभिक प्रयास किए। बाइबिल को लेकर पवित्र हिन्दू ग्रंथों का अनुवाद इन मिशनरियों द्वारा किया गया। कोलबुक ने बाइबल के अनुवाद को विशेष रूप से लोकप्रिय बनाया। जॉन गिलक्राइस्ट की नीति उर्दू की पक्षधरवाली नीति थी। लेकिन विलियम प्राइस एवं कैप्टन टेलर के निर्देशन में फोर्ट विलियम कॉलेज में हिन्दी को लेकर पृथकता रही।

हिन्दी भाषा के विकास के संदर्भ में भारतेंदु हरिश्चंद्र, व शिवप्रसाद सितारे हिन्द एवं राजा लक्ष्मण सिंह का योगदान विशेष अतुलनीय रहा है। शिवप्रसाद सितारे 'हिन्द' ने 'भूगोल हस्तामलक', 'राजा भोज का सपना', 'इतिहास तिमिरनाशक' जैसी रचनाएँ लिखीं। उनकी जीवन भर कठमुल्ला हिन्दी से उर्दू तक की यात्रा है। आलोचना कि के परिचायक होकर हिन्दी के उर्दू की ओर अभिमुख होने इन में यह अनिवार्य सा प्रतीत हो गया। भारतेंदु राजा लक्ष्मण सिंह ने

भी इसके जोर पर चलते हुए हिन्दी को संस्कृतनिष्ठ बना दिया। 'रघुवंश', 'कुमारसंभव', 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' जैसी रचनाओं के अनुवाद पर ही उनका जोर रहा। इंशाअल्ला खाँ ने लिखा था कि 'ऐसी भाषा में कहानी कही जाए जिसमें हिन्दवी छुट और किसी बोली का पुट न हो।' इसके विपरीत राजा लक्ष्मण प्रसाद ने 'हिन्दी और उर्दू को दो बोलियाँ मानी -जाती थी'। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने कुल 17 अनूदित एवं मौलिक नाटक लिखे। 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' का संपादन किया और लिखा कि - 'हिन्दी नए चाल में ढली'। रामविलास शर्मा ने शिवप्रसाद सितारे हिंद की भूमिका को स्वीकारते हुए लिखा है कि '1873 ई. में हिन्दी नए चाल में नहीं ढली बल्कि इसकी तैयारी का काम बहुत पहले हो चुका था।' इसके बावजूद भारतेन्दु मंडली का योगदान अविस्मरणीय है, जिसने नाटक, कहानी, उपन्यास, पत्रिका, अखबार आदि के माध्यम से हिन्दी भाषा को अपनी जड़ें जमाने का मौका दिया। विभिन्न समाज सुधारकों, सामाजिक-धार्मिक संगठनों आदि ने हिन्दी भाषा के प्रयोग में इजाफा किया। आर्य समाज एवं ब्रह्म समाज ने हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा बनाने की पृष्ठभूमि तैयार की तो सुभाष चंद्र बोस, महात्मा गांधी, पुरुषोत्तम दास टंडन ने हिन्दी को अखिल भारतीय भाषा का दर्जा दे दिया। राष्ट्रीय आंदोलन में रह हिन्दी ने भारतीय जनमानस को एकसूत्र में बाँधा। एकता और भावनात्मक व सांस्कृतिक एकता स्थापित की। हिन्दी अब केवल भाषा नहीं थी बल्कि उपनिवेशवाद का विरोध करने वाली प्रतिरोधी शक्ति थी, जिसने हिन्दी जागरण व हिन्दी नवजागरण का भाव जगाया। आजादी के बाद हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाम राजभाषा विवाद में उलझाकर इसका अधिकार इससे छीना गया। मुंशी-आयंगर फार्मूले के जरिए समाधान खोजने की कोशिश की गई लेकिन हिन्दी आज भी सम्पर्क भाषा के रूप में, रोजगार की भाषा बनकर रह गई है। जो भाषा की स्वीकार्यता जिसे भाषा का प्रयोग हो रहे मानते हैं, यही देश की ... आजादी अथवा ... उदारीकरण के इस दौर में सब 22 भारतीय भाषाओं के साथ हिन्दी अपनी जगह बनाकर आगे बढ़ रही है लेकिन

* भाषाविद आलोचकों ने यह स्वीकार किया है कि बाजार की व्यावसायिक भाषा हिन्दी भी हो सकती है। 'ठंडा मतलब कोका कोला', 'लगे रहो इंडिया', 'बनाते रहो' आदि विज्ञापनों के प्रयोग हैं जो हिन्दी की मजबूत व लचीली प्रवृत्ति का परिचय कराते हैं। मीडिया, फिल्म, नेटवर्क आदि के बढ़ते प्रभाव ने व्यापक रूप से भारतीय भाषाओं को प्रभावित किया है लेकिन फायदा हिन्दी को ज्यादा मिला है। हिन्दी में पारिभाषिक शब्दकोश को परिवर्तित-परिमार्जित करने का काम चलाया जा रहा है जो वैज्ञानिकों-तकनीशियनों द्वारा भाषा के स्पष्टीकरण व मानकीकरण का काम है।

अतः कहना चाहिए कि हिन्दी सिर्फ बाजार की भाषा ही नहीं वैज्ञानिकता के विज्ञान की भी उपयोगी भाषा के रूप में हमारे सामने आई है। हिन्दी के विकास का सबसे बड़ा बाधक हम में से वह [illegible] नहीं है, [illegible] [illegible] मनोवैज्ञानिक ग्रंथि से है। जिस दिन हम हिन्दीभाषी लोग अपनी भाषा में काम करना, अपनी भाषा में बोलना पसंद करेंगे, उसी दिन हिन्दी को समुचित आदर मिल पाएगा।

V. giri

[illegible]

मुकेश कुमार (36वाँ स्थान), I.A.S.-2008

Mukesh Ku.

समय :- 2 घंटे

एम.ए. (हिंदी साहित्य), अंक 45

टिप्पणी :-

(i) आचार्य द्विवेदी की संपादन कला
(ii) छायावाद भक्ति काव्य के रूप में
(iii) नई कविता - प्रगति एवं प्रयोग
(iv) जनवादी कविता

प्रश्न :-

(i) स्वच्छंदतावाद एवं छायावाद में क्या संबंध है? हिंदी साहित्येतिहासकारों में प्रचलित विवाद का हवाला देते हुए अपनी राय बताईए।

(ii) प्रगतिवाद 1945 ई० में खत्म नहीं हुआ, वह आज तक किसी न किसी रूप में बना हुआ है।

(iii) समकालीन हिंदी कविता के दशा एवं दिशा पर एक निबंध लिखिए।

IAS ACADEMY
दृष्टि The Vision
PH: 7654128/9810316596

मुकेश कुमार

(आधुनिक कविता का इतिहास)

टिप्पणी :- प्रश्न सं.- (1) छायावाद मुक्ति आख्यान के रूप में :-

छायावाद सिर्फ के पार केवल चाँद-तारों की कविता नहीं है, बल्कि यह मुक्ति का साहित्य है। छायावाद में मुक्ति के कई स्तर हैं :- सामंती शोषण से मुक्ति, साम्राज्यवादी पराधीनता से मुक्ति, रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों से मुक्ति, जड़ एवं स्थिर भाषा एवं भावों से मुक्ति। मुक्ति का आकाश रचने के कारण ही छायावाद मुक्ति आख्यान के रूप में स्थापित हो जाता है, जहाँ 'जागो जग, जागो जग, हे पुरुषोत्तम नवीन' का आह्वान करने वाला भाव मौजूद है। ✓

ऐसी मान्यता है कि जब देश में आज़ादी की लड़ाई लड़ी जा रही थी तो छायावादी कवि कल्पना के तार बजाया करते थे, प्रकृति से गुफ्तगू कर रहे थे और मूलतः उनका काव्य पलायनवादी हो गया था। देश के नदी-नाले, पेड़-पौधे, पहाड़-झरने आदि से प्रेम अंततः राष्ट्रीय प्रेम है। छायावादी दौर में मुक्ति की आकांक्षा के लिए बेचैन पीढ़ी प्रकृति का सहारा लेती है तो उसे पलायनवादी नहीं कहा जा सकता है क्योंकि

'घर की लघु सीमा में
बँधे हैं क्षुद्र भाव
प्रेम का पयोनिधि तो उमड़ता है
सदा ही निःसीम भू पर'। ✓

छायावाद न तो स्वप्न एवं भ्रांति का काव्य है न ही पलायनवृत्ति का काव्य। 'रवि हुआ अस्त' से उपजा अंधेरा चाहे जितना घना हो, अन्याय चाहे शक्ति से गठबंधन क्यों न कर बैठा हो, लेकिन 'शक्ति की करो मौलिक कल्पना' का भाव अभी जीवित है। निराला की 'राम की शक्तिपूजा' हो या प्रसाद की 'देवसेना की प्रतिज्ञा' या महादेवी की 'क्यों इसका है सोच सजनी', 'जाग तुमको दूर जाना' - हर जगह इसी शक्ति को बटोरने की बात है। ✓

उत्तम

आज विजयी हो तुम
और पराजित हैं हम
परंतु अपेक्षा मेरे मन की
एक कल्पना है।

ये छायावादी कवि ही थे जो अंग्रेजों के 'शासक' चरित्र पे चोट कर रहे थे। 'संध्या की गोद में आया है आज प्यार' जैसे गीत लिखे और 'स्वयंप्रभा, समुज्ज्वला, स्वतंत्रता पुकारती' जैसे गीत लिखे और सिर्फ अंधेरे से मुक्ति खोजने का वास्तविक प्रयास नहीं तो महादेवी भी जब लिखती हैं कि 'मन के घर में और क्या है?' तो स्त्रीत्व की आकांक्षा को मुखरित करती हैं। 'देवि की भाँति का भार हूँ' तो 'देवी', 'माँ', 'सहचरी', 'प्राण' या 'गंगा मैया' कहती हैं। नारी को केवल 'श्रद्धा' बोलिए पावन ध्यान!' कहने का मतलब नारी को केवल 'श्रद्धा' नहीं कहा है, बल्कि 'श्रद्धा' एवं 'इड़ा' के समन्वय से मुक्ति अंततः कहना चाहिए कि भाव, भाषा, छंद भी स्वच्छंद कहती हैं। अंततः कहना चाहिए कि भाव मुखर रूप ग्रहण करके मानव मुक्ति उनकी मुक्ति का एक रूप अख्तियार कर लेता है क्योंकि छायावादी कवि सिर्फ पलायन का विधान करने वाले नहीं हैं प्रकृति-प्रेमी नहीं हैं, मुक्ति के उपासक हैं - वह भी बल्कि 'विप्लव के वीर' हैं, 'मौलिक मुक्ति' के।

12

IAS ACADEMY
दृष्टि
The Vision

टिप्पणी :-

(11) नई कविता : प्रगति एवं प्रयोग

उत्तर :- हिंदी साहित्येतिहास में एक महत्वपूर्ण काव्यधारा के रूप में 'नई कविता' ने अपनी पहचान बनाई है। अज्ञेय इसे 'असाधारण की विशिष्टता' का काव्य मानते हैं तो गिरिजाकुमार माथुर 'असाधारण की साधारणता' का काव्य। मुक्तिबोध के लिए यह 'खास परिस्थितियों में उपजी व्यक्ति की वर्तमान अनुभूति की कविता है' या 'वैविध्यमय जीवन के प्रति आत्मचेतस व्यक्ति की कविता है'। रघुवीर सहाय के लिए यह कविता 'मनुष्य की समग्र प्रतिक्रिया है'। जो धीमंत नामों के लिए 'ये एक ऐसे जीने रहने की कविता है जो किसी के नहीं होने से कुछ नहीं होता'। 'एक ऐसी कविता जहाँ किसी के नहीं होने' ... 'शानविलास वाली जैसे अमीरजादों के लिए' नई कविता जीवन के ... की कविता है'। हिंदी साहित्येतिहास की परंपरा में छायावाद, प्रगतिवाद के बाद नई कविता का स्थान है। विशेष तौर से प्रयोगवाद के बाद नई कविता का स्थान है। इसमें जनवादी भावों के लिए कोई स्थान नहीं था, यहाँ एक ओर मार्क्सवादी थे तो दूसरी ओर अस्तित्ववादी, एक ओर ... तो दूसरी ओर गाँधीवादी। कुछ लोग लोहियावादी - समाजवादी थे तो दूसरी ओर ... थे तो अन्य ... थे। राजनीति से प्रेरित होकर लिख रहे थे

कविता व्यक्ति की अनुभूति की प्रामाणिकता से ... नई कविता का रूप सामने आ गया। प्रयोगवादियों के नाम पर नई कविता का ... प्रयोग यहाँ बदस्तूर जारी रहा तो प्रगतिवादी कवियों ने भी वर्ग-चेतना से लैस होकर कविताएँ रचीं। प्रयोगवादी तो प्रयोगवादी प्रगतिशील कवियों ने भी केदार जैसे शिल्प-प्रबोध का सफलतापूर्वक किया। मुक्तिबोध के यहाँ 'ब्रह्मराक्षस', 'अँधेरे में' और 'चकमक ...' जैसी कविताओं में ... ने मार्क्सवादी सौंदर्यशास्त्र का नई चेतना से लैस प्रयोग ... किया। रघुवीर सहाय की ... कि 'हम तो सारा का सारा लेंगे' ... 'कम से कम वाली बात न हमसे कहिए' जो ... 'जो है उससे बेहतर चाहिए'। अज्ञेय के ... मुक्तिबोध को ... यहाँ दीप, ... , नदी, मछली, समंदर बन-के-मन ... छोड़ बन गए क्योंकि पुराने प्रतीकों से अब काम चलाना

मुश्किल हो गया था :-

'देवता इन प्रतीकों के कर गए हैं कूच
बासन अधिक घिसने से मुलम्मा छूट जाता है'

मुक्तिबोध ने तालस्ताय, गाँधी, तिलक, नेहरू, मुखर्जी, आदि सबको प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया। गिरिजा कुमार जैसे नए कवियों ने भी ऐसे प्रयोग किए :-

'चाँदनी चंदन सदृश हम क्यों कहें
मुख हमें कमलों सरीखे क्यों दिखें
चाँदनी उस रुपये सी है
जिसमें चमक होती है, पर खनक गायब है'

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविताएँ निम्नवर्गों से गईं, जैसे - 'जिन्दगी कोई मरा हुआ चूहा नहीं' - या लोकतंत्र 'भाड़ में लटकाए चूहे' की तरह हो गया। किसी को गाँव धूल भरे 'सिंधुरी मंजीरा' लगने लगा तो किसी को नवंबर की दोपहर जाड़ों की तरह। ऐसा नहीं था लोकरंग या ग्राम जीवन की ओर नहीं थी लेकिन 'इस युग का मुहावरा है कुछ नहीं पहनाइ' ने नए बोध की सृष्टि की थी। मुक्तिबोध के यहाँ 'आत्म का मार्क्सीकरण' यो उसका संघर्ष 'आत्म-चित्त-वेदना' की सृष्टि करने लगा तो अज्ञेय के यहाँ 'अकेलेपन का वैभव' था :-

'यह दीप अकेला स्नेह भरा
है, गर्व भरा मदमाता'

रघुवीर सहाय डर रहे थे कि 'मैं फिर अपनी बात कहकर चौंक जाऊँगा' तो मुक्तिबोध 'अभिव्यक्ति के खतरे उठाने' को तैयार हो रहे थे। सर्वेश्वर समझ चुके थे कि 'सत्य की ओट बहुत गहरी होती है'। अन्ततः कहना चाहिए कि चाहे राजनीति की बात हो या लोकजीवन की, चाहे रूप की बात हो या वस्तु की, चाहे देह की बात हो या आत्मा की सब कुछ को समेटकर नई कविता अपना पहचान बनाती है। नयी कविता में भाषा की पवित्रता का आग्रह नहीं है, कहीं बिम्बधर्मिता है, तो कहीं 'सपाटबयानी', कहीं क्रान्ति है तो कहीं प्रयोग। इसलिए

13 पर्याप्त - कहना चाहिए कि प्रगतिवाद यदि वस्तु पक्ष पर बल देता है और प्रयोगवाद रूप पक्ष पर तो नई कविता सबको समेटकर चलने वाली समग्र काव्यधारा है।

IAS ACADEMY दृष्टि The Vision PH : 7654128/9810316...
IAS ACADEMY दृष्टि The Vision PH : 7654128/9810316...

(14) जनवादी कविता :-

जनवादी कविता शोषितों, दलितों, वंचितों के पक्ष में लिखी गई कविता है। जनप्रतिबद्धता का आग्रह जब तीव्र हो चला और भारत सरकार ने आर्थिक वैषम्य ने आजादी पर प्रश्नचिह्न लगाना शुरू कर दिया तो जनवादी कविता ने अपनी प्रखर पहचान बनाई। जनवादी कविता में एक ओर तो ऐसे कवि थे जिन्होंने 'नई कविता' में अपनी अहम भूमिका निभाई और सपनों को पूरा होते न देख जनवादी आन्दोलन को चेताया, तो दूसरी ओर ऐसे कवि भी थे जिनकी निहत रोमानियत 'अकविता' के बनाने पर टूटी थी और वे कविता के जरिए सिर्फ आक्रोश नहीं सार्थक संवाद भी स्थापित करना चाहते थे। पहले प्रकार के कवियों में शमशेर, नागार्जुन जैसे कवि थे तो दूसरे प्रकार में आलोकधन्वा, गोरख पाण्डेय, धूमिल, अरुण [illegible] आदि।

जनवादी कविता को मुख्यत: दो चरणों में बाँटा जा सकता है - पहला चरण 1970 के दशक से शुरू का है और दूसरा चरण 1975 अर्थात् आपातकाल के बाद का। जनवादी कविता में कवियों का आक्रोश, क्रान्तिकारिता का तीखा अनुभव रहा। आक्रोश ने संप्रेषण को बाधित किया :-

'खाली हुए पतीली में
या देश नाप रहा है
या दाम नाप रही है।'

× × × × ×

'ऐ लोगों यह भदर गुलाम है अमीरों का।
इसे बमों से उड़ा दो!'

जनवादी कवियों ने आपद आधार वाले विशिष्ट विषयों पर लिखा, लेकिन प्रेम, सौंदर्य और प्रकृति की कविताएँ नहीं लिखी पढ़नी है। इन तत्वों को इन्होंने छायावादी कवियों की ही भांति भाव भाववश: छोड़ दिया जबकि राग-तत्व मनुष्य की मनुष्यता को बचाए रखने का भी एक उपक्रम है। जब धूमिल लिखते हैं :-

IAS ACADEMY ★ ★ Vision PH: 7654128/9810316[illegible]
IAS ACADEMY ★ ★ Vision PH: 7654128/9810316[illegible]

'भूख से परेशानी, ऐसी हुई हथेली का नाम गया है
और, नहीं हुई मुट्ठी का नाम नक्सलवादी'

जो धर महज कविता में नहीं होती है बल्कि लोकतंत्र की आलोचना भी बखूबी करती चलती है। कहना चाहिए कि जनवादी कविता अपनी शैली से ही आलोचनात्मक रही है। प्रभाकर जैसे कवि भी थे, जिनके यहाँ प्रेम जैसा विषय भी आशंकित था :-

'विदा में तुम चले जाओगे
और धोखा मां पानी पर जाओगे'

अंततः कहना चाहिए कि गोरख पाण्डेय, धूमिल से लेकर अतिक्रान्तिकारिता का आग्रह ज्यादा जो नागार्जुन जैसे कवि भी सहज भाषा में राजनीति को 'चने लाने वाली' कहकर लोकतंत्र की सीमाएँ नग्न कर देते हैं। मुक्तिबोध के प्रभाव में बहुत सारी लम्बी कविताएँ फैंटेसी के सहारे लिखी जा रही थी लेकिन धूमिल कविताओं में 'आपकी गरज' जैसी कविता और लेकिन जनवादी कवियों देखा जा सकता है भाषा की सहजता पर जनवादी कवियों का ज़ोर था लेकिन धूमिल 'कैसुप्ती कमरों में अर्थ खोजना व्यर्थ था।' इसलिए कहा जा सकता है कि जो जनवादी कविता शुरू में अतिक्रान्तिकारिता का आग्रह लेकर चली थी, वही बाद में एक संतुलित काव्यधारा के रूप में धीरे निखरकर हमारे सामने आती है।

ठीक 12

IAS ACADEMY The Vision PH: 7654128/9810316386
IAS ACADEMY The Vision PH: 7654128/9810316386

प्रश्न :- (8) → प्रकृति प्रगतिवाद ------

उत्तर :- प्रगतिवाद भारत को आजादी मिलने के कुछ वर्षों पहले तक चलने वाला काव्यांदोलन था, जो छायावाद की समाप्ति के बाद हिंदी साहित्येतिहास में अपनी पहचान बनाना शुरू करता है। राष्ट्रीय आंदोलन में नए दौर के साथ समाजवादी - साम्यवादी दलों ने अपनी सक्रिय उपस्थिति का अहसास करना शुरू किया तो 'प्रगतिवाद' की शुरुआत हुई। यह एक ऐसी काव्यधारा थी जिसने शोषितों के प्रति न केवल सहानुभूति जताई बल्कि मार्क्सवादी विचारधारा से अनुप्राणित होकर आम लोगों की आवाज बन गयी। यूं तो हर काव्यधारा को युग-सापेक्ष मानना हमारी मजबूरी होती है अन्यथा एक प्रवृत्ति के तौर प्रगतिवाद का विकास निरंतर तौर से 1945 के बाद भी माना जाना चाहिए।

प्रगतिवादी काव्यधारा का केंद्रीय स्वर था- सामाजिक-राजनीतिक एवं आर्थिक रूप से आजाद भारत की मांग। अधिकारों की समानता के साथ-साथ अवसरों की समानता की बात भी की जा रही थी। इसलिए एक प्रवृत्ति के तौर पर ये सारी चीजें अभी भी कवियों के एक बड़े वर्ग के लिए साध्य हैं। कहना न होगा कि कविता में निरंतर दीखने वाला विरोध का स्वर चाहे वह 'नई कविता' में हो, चाहे 'जनवादी कविता' में, चाहे 'अकविता' में या फिर 'समकालीन कविता' में मूलतः इसी 'अंतिम' मनुष्य की मुक्ति की कामना के लिए किया गया विरोध है। निराला की 'राम की शक्ति पूजा' में 'होगी जय, होगी जय...' का भाव विजय की ओर संकेत तो करता है लेकिन जय के न मिल पाने का भी संकेत करना चाहता है। इसलिए निराला की कविताओं में पहली बार यथार्थ अपने निपट नंगेपन में नजर आता है, जो इसके मुलम्मा लेकर नहीं चलता है, और न ही उसे 'मधुर - मधुर' बनाना चाहता है। हाड़-मांस का आदमी जिसे

दु:ख पुनरुक्ति नहीं करता है, बल्कि उनमें आक्रोश भरता है क्योंकि 'भूखों की कोई विचारधारा नहीं होती'। 1936 ई० में जो निराला राम जैसे असाधारण व्यक्तित्व को भी साधारण बनाकर 'राम की शक्ति पूजा' लिखते हैं, वही निराला अपनी लोकोन्मुख दृष्टि का परिचय देते हुए साधारण दिखने वाला कुकुरमुत्ता को लगभग 10 साल बाद असाधारण बना देते हैं। मुक्तिबोध, त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर बहादुर सिंह एवं नागार्जुन जैसे प्रगतिशील कवि निराला की ही 'बाँह कुछ-कुछ मुड़े' हैं। दु:ख और अवसाद जितना गहरा निराला के यहाँ था वही मुक्तिबोध के यहाँ 'आत्म-चित्त-वेदना' की सृष्टि करता है। मुक्तिबोध कहते हैं :-

'ओ मेरे आदर्शवादी मन
ओ मेरे सिद्धांतवादी मन
अब तक क्या किया
जीवन क्या जिया'

* * * *

जो भी है, जैसा है उसके स्वीकार है

मुक्तिबोध के यहाँ लिए 'गरबीली गरीबी' जैसे ही अभिव्यक्ति का खतरा उठाने का साहस पैदा होता है। रघुवीर सहाय जब लिखते हैं :- "फटा-सुथन्ना पहना जिसका हरचरणा गुन गाता है
जन-गण-मन अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता है"
तो यह साफ हो जाता है कि वे राष्ट्रवाद की संकल्पना केवल मध्यवर्गीय संकल्पना मात्र है। नागार्जुन भी ऐसे ही कवि हैं जहाँ आम जीवन का चित्र अपने अधिक [illegible] दिखाई पड़ता है। वे यह कहने को मजबूर हो जाते हैं कि 'प्रतिहिंसा ही स्थायी भाव है।' और 'बाल-न बाँका कर सकी शासन की बंदूक'। 'अकाल और उसके बाद', 'हरिजन गाथा' से लेकर '[illegible] पंछी है' जैसी प्रकृति-चित्रण वाली कविताओं [illegible] —।

IAS ACADEMY
IAS ACADEMY

प्रगतिशील इसकी जनपक्षधरता इसकी ईमानदारी और प्रतिबद्धता का अनुमान इसकी इसी से जनवादी पक्षधरता का भी रंग। केदारनाथ अग्रवाल ने कभी ये कह दिया है :-

'जब बाप मरा तो क्या पाया भूखे किसान के बेटे ने'

× × × ×

'बाप बेटा बेचता है
भूख आरा टेकता है।'

आक्रोश और आलोचना का यही स्वर धूमिल, गोरख पाण्डेय, आलोक धन्वा के यहाँ तीव्र हो जाता है। वे कहते हैं:- 'क्या आजादी तीन थके हुए रंगों का नाम है?' गोरख पाण्डेय की यह कविता इसी आजादी को ईमानदारी से रेखांकित करते हैं :-

'जब पाँव में ये अगर आदमी जिस हाल तक बना रहे
सिर पर रखकर हाथ कहिए तो क्या आजाद है'

समकालीन कवियों ने लोकतंत्र के अवमूल्यन, आर्थिक वैषम्य और जीवन के विभिन्न रूपों को लेकर अनेकानेक कविताएँ लिखी गईं। लेकिन विमर्श और नारीवादी विमर्श के रूप में चलने वाला आन्दोलन इसी सन्दर्भ को कहता है जो भी प्रगतिवादी काव्यधारा से शुरू हुई थी। विनोद कुमार शुक्ल जैसे कवियों के यहाँ अब भी मानव मात्र के प्रति गहरी भावात्मक खुशी हुई :-

'आकाश में कितने तारे
एक भी अतिरिक्त नहीं
पेड़ में कितने पत्ते
एक भी अतिरिक्त नहीं
मनुष्य की कितनी रचनाएँ
एक भी अतिरिक्त नहीं।'

बहुत सुन्दर

3½ अतः कहना चाहिए कि प्रगतिशील काव्यधारा का नाम अब भी मुखरित है क्योंकि ज्ञानरंजन के शब्दों में— 'कविता जीवन के साथ भागे नहीं है।'

IAS ACADEMY
IAS ACADEMY

प्रश्न सं.-⑤ :- समकालीन हिंदी कविता की शुरुआत सन् 60 के दशक से मानी जाती है। तकनीकी रूप से 60 के दशक से समकालीन कविता की शुरुआत मानने से नई कविता को लेकर जनवादी कविता तक का काल स्पष्ट नहीं हो पाता है। इसलिए वस्तुतः सन् 1980 के बाद लिखी गई कविताओं को समकालीन कविता के रूप में चिह्नित किया जा सकता है।

समकालीन कविता जीवन को अपनी धुरी बनाकर चलने वाली एक ऐसे दौर में लिखी गई कविता है जिसमें न तो आज़ादी की लड़ाई लड़ने वाली पीढ़ी मौजूद है और न ही उससे उत्पन्न मोहभंग को सीधे-सीधे महसूस करने वाली पीढ़ी। यह दुनिया के करीब आते जाने और बाज़ारवाद की पकड़ गहरी होने से उपजे अंतर्विरोधों को मुखरित करने वाली कविता है। आज़ादी के इतने वर्षों बाद भी जब स्थिति बदतर है :-

'बाप मेरा बेचता है मुझ को बेजान होकर
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
धर्म भारत [illegible] होकर, हो रही अनीति [illegible]'

या फिर अकाल से स्थिति भयावह हो चली है :-

'कई दिनों तक चूल्हा रोया
चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया
सोई उनके पास'

* *   * *

'घर में आए फिर से दाने कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद'

नागार्जुन ने इन आठ पंक्तियों में अकाल की भयावहता और जनता की संवेदनशून्यता का चित्र खींच कर प्रभावित रचना की है। ✓

त्रिलोचन जैसे समकालीन कवियों के यहाँ जीवन का संघर्ष, दुःख का अवसाद है उत्साह-अनुराग, सुख-दुःख का विश्लेषण उनके जीवन में नहीं है :-

'जीवन बिता है यह शूल में कि फूल में
बिता है तो बिता है यह !'

शमशेर बहादुर सिंह जैसे कवि भी हुए जिन्होंने अनुभूति को भाववादिता से ग्रहण की लेकिन मूलतः वे सुख और प्रेम के कवि बने रहे। प्रेम का ऐसा उदात्त वर्णन 'टूटी हुई, बिखरी हुई' कविता में उन्होंने किया है, जो अन्य हिन्दी कवियों के यहाँ दुर्लभ है :-

'तुम मुझे प्रेम करो जैसे मछलियाँ लहरों
से करती हैं, लेकिन वह उसमें फँसने नहीं आतीं:

शमशेर का जीवन धारा की धारा की तरह बीते हुए, वे 'प्रेम के नगरों पर ... लेट जाना चाहते हैं' और दुख जैसे अमूर्त भाव को भी उन्होंने मानवीकृत करके दिखाया:

'दुख मेरी दोस्त है, जो मुझ पर रख रही है'

समकालीन कवियों में धूमिल, मंगलेश डबराल, उदय प्रकाश, आलोक धन्वा, अरुण कमल, अशोक वाजपेयी, चन्द्रकान्त देवताले और केदारनाथ सिंह प्रमुख कवि हैं। अपने लेखों की गद्यात्मकता का प्रभाव और नये ढंग के बिंबों का प्रयोग समकालीन कवियों में देखा जा सकता है :-

'कोई भी तुम बीते'

केदारनाथ (विशिष्ट सन्दर्भों के 'बिंबधर्मी' कवि हैं तो अशोक वाजपेयी 'शब्दों की यातना' रचने वाले कवि

अंततः कहना चाहिए कि मध्यकालीन कवियों में जीवन का राग है तो विराग भी, यदि प्रकृति प्रेम है तो वैचारिकता का आग्रह। अपनी सीमाओं और संभावनाओं के बावजूद अपनी बेचैनी में मध्यकालीन कविता जीवन की कविता है जहाँ नए बिंब, सर्जनात्मक भाषा और विचारों का आग्रह एक साथ मुखरित हो रहा है।

25

— भक्तिकाव्य सम्बन्धी
— विवेचन, विचार भाव से आधार, भाषा, इत्यादि बिन्दु पर विचार